Vol 3 Issue 12 Jan 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-3 | Issue-12 | Jan-2014
Available online at www.isrj.org

हिंदी और कन्नड भक्ति काव्य का अंतःसंबंध

भगवान आदटराव

संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय , मंद्रुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुर.

सारांश :-कन्नड़ के शरणसाहित्य कालीन समाज वर्णन–पध्दति के अनिष्ट कारणों से जाति उपजातियों में भेंट गया था। अस्पृश्यों की स्थिति दयनीय थी। वे सब की सेवा करके सब प्रकार की सुविधाओं से वंचित थे। अत्यंज अत्यन्त ही अपमानित और अस्पृश्य थे। उच्च वर्ग और वर्णवाले इनके साथ रोटी–बेटी का संबंध रखना तो दूर इनकी छाया तक से बचते थे। वैदिक धर्माचरणों के कर्मकांड से समाज की दूर्गति हो गई थी। इस प्रकार वह समाज धार्मिक भेद भाव, जातिगत संघर्ष, शुद्र और अस्पृश्यों के अपमान से कलंकित था। ठीक इसी प्रकार हिन्दी के संत साहित्य कालीन समाज मे भी वर्ण पध्दति के कारण हिन्दू समाज में ब्राह्मण, शुद्र, कुलीन–अकुलीन, अस्पृश्य जैसी भेद–भावनाएँ पनप रही थी। अंत्यज सब की और सब प्रकार की सेवा करके भी उपेक्षित, अपमानित और सुविधाओं से वंचित था। प्राणी मात्र के समान उसका जीवन था, गाँव के बाहर रहता था और अस्पृश्य था।

प्रस्तावनाः–

कन्नड के शिवशरण और हिन्दी के संत साहित्य के उभय भाषाकालीन समाज में भी मनुष्य जाति से पहचाना जाता था न कि गुणो और कर्मों से। अपने आपको धर्म के ठेकेदार समझनेवाले धर्मान्ध धर्म के नाम से सामान्य लोगों का शाषण करते थे, जिसमें अंत्यज ही शोषित थे। अस्पृश्याचरण मानवीयता के प्रति घोर अपराध था। कहा जाता है कि गाँव में आते समय अस्पृशों को चिल्लाते हुए आना पड़ता था जिससे उच्च वर्ग और वर्ण के लोग इनकी छाया से बने के लिए घर के द्वार बन्द कर लेते थे। अंत्यजों की ऐसी स्थिति किसी भी देश के समाज के लिए अपमान की बात है। समाज को ऐसी व्यवस्था से संत और शरण कवियों का हृदय रो उठा। ऐसी व्यवस्था के विरोध में उनकी लेखनी ने आवाज उठाई। इसीलिए छुआ–छूत के आचरणों पर उभय भाषी संत कवियों का व्यंग्य स्पष्ट रूपसे देखने मिलता है।

बसवण्णा ने ब्राह्मणों के इस अस्पृश्याचरण पर व्यंग किया है और कहा है कि ब्राह्मणों की भक्ति को छूताछूत कहने में ही नष्ट हो गई ''ब्राह्मणोख की भक्ति छुआछूत में ही गई।''

शिवशरण सिध्दारामेश्वर का मन तो इस अस्पृश्याचरण को देखकरर छोटा होता है। उसने कहा है कि इसे देखकर शर्म के मारे मेरा मन बैठ गया है– 'स्पर्श करेंगे यह सोचकर भागनेवालों को, देख–देख कर शर्म से झुक गया है। कबीरदास जी तो छुआछूतचरण करनेवाले ब्राह्मणों से व्यंग करते है और पूछते हैं कि छुआ–छूत कहनेवाले हे, बाह्मण तुम अपनी माँ के पेट से बाहर आयाही क्यों?

छोति छोति करता, तुसही जाए। तो गर्भवास्त्र कहे कौं आए?

मनुष्य अपने गुणों से और कर्मों से श्रेष्ठ या कनिष्ठ होता है न कि जाति से या जन्म से। लेकिन हिन्दी के संत और कन्नड के शरणसाहित्य कालीन समाज में जाति और जन्म से ही मनुष्य की श्रेष्ठता और कनिष्ठता की गणना की जाती थी जो अवैज्ञानिक और अनिष्टकारक है। जाति के नाम से मनुष्य की ऐसी उपेक्षा शुद्र, दलित और अस्पृश्यों के अपमान ने संत और शिवशरणों के मातृवत कोमल हृदय को हिलाकर रख दिया था। समाज के प्रति सचेत और संवेदनशील दन दोनों कवियों ने निश्चय किया कि समाज से जाति पध्दति को और सब प्रकार को नारकीय भेदभावों को मिळाकर रख देंगे और ऐसे एक समाज की स्थापना करेंगे, जहाँ सब प्रकार की समानताएँ, जाति के कारण कोई उच्च या नीच नहीं गिना जायेगा।

इन्होंने स्पष्ट कर दिया कि मनुष्य जो भी वृत्ति अपनाता है वह पेट भरने के लिए मात्र है, स्वावलंबन का मार्ग मात्र है। वृत्ति से कोई श्रेष्ठ या कनिष्ठ नहीं होता। बसवण्णा ने कहा है कि अपनी वृत्ति मात्र से कोई लाहोर, धोबी, जुलाहा या विप्र कहलाता है। यह उनकी उच्चता या नीचता का परिचायक नहीं है। क्या किसी का जन्म कान से हुआ है, जो छोटे बड़े का भेदभाव करत हो। ''लोहा गरमाया लोहार विप्र कहलाया। जग में कान से कोई पैदा हुआ है?''

संतो नें भी यह स्पष्ट कर दिया है कि अरे मूर्खों! किसी की जाति–पाति लेकर क्या करते हो। उनका ज्ञान देखो और कर्म देखो। किसी का ज्ञान या कर्म ही एक समाज को अच्छा या बुरे मार्ग पर ले जाता है न कि उसकि जाति। कबीरदास की इन पंक्तियों का भाव यही है–

''जाति, न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मेल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।''

अपने युगीन जाति–पध्दति की अनिष्टता और इससे दलितों का सब प्रकार के शोषण का परिचय और अनुभव इन संत और शरणों को बड़ी गहराई से था। इसमें से अधिकांश कवि सर्वहारा वर्ग से आए हुए थे जैसे– चमार, कक्कय्य, नाविक चोडय्य, सूळे (वेश्या) संकव्वे और जुलाहा कबीर, नामदेव शिंपी, रैदास चमार, दादू दयाल मोची (मुसलमान धुनिया भी कहा जाता है) बुल्लासाब कुर्मी, दयाबाई ढुसर वैश्य आदि! ठसलिए उभय भाषी संत और शिवशरणों ने अड़े ही सात्त्विक क्रोध के साथ अस्पृश्याचरण का खंडन किया है और समानता का प्रतिपादन किया है। अंत्यजों को दोनों ने ऊपर उठाया और मार्गदर्शन किया। उनमें स्वाभिमान भरकर व्यक्तित्त्व के समग्र विकास के लिए सब प्रकार के अवकाशों का निर्माण किया। इन्होंने जाति की अनिष्ट पध्दति से अपने युगीन समाज को मुक्त कराने का जो प्रयास किया है अन्यत्र दुर्लभ है। यदि इनके काव्य में जाति पध्दति का खंडन, आत्मीयता से साम्य– भावना का उपदेश, सबमें समान आत्मा के दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है तो वह इनकी सामाजिक चेतना के कारण हो हुई है।

जाति के नाम से भेदभाव न करने की अभिव्यक्ति शिवशरणाों के वचनों में पर्याप्त मात्रा में मिलती है। बसवण्णा ने कहा है कि ज्ञान और मानवीयता के स्तर पर सोचनेवालों के लिए मनुष्य की जाति एक ही है। क्या हरिजनों की बस्ती और शिवमंदिर की जमीन एक नहीं? स्नान और पूजन का जल एक है,

''हरिजन बस्ति का जल एक है।
स्वज्ञानी के लिए जाति एक है।''

पहले ही कहा जा चुका है कि अंत्यज का गाँव के बाहर उच्चवर्ग और वर्णवालों से दूर उपेक्षित होकर रहते थे। अंत्यजों की ऐसी स्थिति ने शिवशरणों के हृदय में विद्रोह और करूणा की भावना जगा दी। शिवशरणी बोंतादेवी कहती हैं कि ग्राम के अन्दर और बाहर की जगह में कोई अंतर हो सकता है? ब्राह्मणों के नाम से और अस्पृश्यों के नाम से कोई जगह हो सकती है? जमीन तो सब एक ही है फिर भिन्नता का प्रश्न ही कहाँ उठता है–

''ग्राम के भीतर–बीहर के ज़मीन भिन्न–भिन्न हैं? ग्राम में ब्राह्मणों के ज़मीन, ग्राम के बाहर अंत्यजों के ज़मीन भिन्न–भिन्न हैं? जहाँ कही देखो ज़मीन एक ही है–''

शिवशरणी कालव्वे तो कहती है कि जातिवादी व्यक्ति भक्त हो ही नहीं सकता। असत्य, ईर्ष्या और जातिवाद का खंडन करते हुए शरणी कालव्वे कहती है। 'अग्नी–सा जलनेवाला भक्त है? असत्यमार्ग से अर्जन करनेवाला भक्त है? जाति को श्रेष्ठ कहनेवाला भक्त?

शिवशरण यह भलीभांति जानते थे कि जब तक जाति उपजातियों में रोटी–बेटी के संबंधो स्थापना नहीं होती तब तक जाति पध्दति की अनिष्टता दूर नहीं होगी। लोग प्रायः खाने–पीने के संबंधो को तो स्वीकार करते थे पर शादी विवाह के संबंधो को स्वीकार नहीं करते थे।

इन्होंने स्पष्ट रूप से बताया है कि जात–पांत जैसे हीन विचारों की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देना चाहिए। चरित्र एवं आचार विचारों को दखकर विवाह जैसे रक्त संबंधों को बढ़ाना चाहिए–उनमें जाति नहीं, चरित्र को परखकर उनसे विवाह सम्बन्धो की स्थापना करनी चाहिए। जाति के नाम से भेदभाव का संतो ने भी कठोर विरोध किया। समानता की भूमिका पर स्वस्थ समाज की स्थापना का प्रयास इन्होंने किया। जातिवाद के तिरस्कार की अभिव्यक्ति इन दोनों के काव्य में समान उत्साह और प्रामाणिकता से हुई है। संतों का भी कहना है कि जब एक ही रक्त सबमें संचार करता है और एक प्राण सब में व्याप्त है तो मनुष्य–मनुष्य में जाति के नाम से भेदभाव क्यों? कबीरदास जी कहते है कि जब सब में व्याप्त रक्त, प्राण श्वासोच्छवास एक ही है, सभी को उसी प्रकार माँ की संतान हैं तो किस ज्ञान से हममें भेदभाव की भावना पनप रही है जो समाज की एकता के लिए घातक है–

''हम तुम माहि एकै लोहू।
एकै प्रान बियापै मोहू।।
एकहि वास रहे दस मासा।
सूतग पातग एकै बासा।।
एकहि जननी जना संसार।
कौन ग्यान ते भयेऊ रनियारा।।''

इन संत कवियों ने सब में एक ही ब्रह्म का दर्शन किया, जिससे मनुष्यों में जाति के नाम का प्रश्न ही नहीं उठता। संत दरिया तो ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, हिन्दू, तुरक सब में एक ही तत्त्व का दर्शन करते हैं एवं सबको समान दृष्टि से देखते हैं–

''एकै ब्रह्म सकल घट भसत अब कहिए किमि खंडित।
ब्राह्मण क्षत्री वैंस सुद्रसम, हिन्दू तुरक किमि कहिए।
माटी एक, नाना विधि वासन एक निमित पर रहिए।।''

कबीरदास जो ने तो ब्राह्मण शुद्र जैसे भेदभावों को स्पष्ट रूप से तिरस्कार किया है उनका समस्त काव्य इस बात का प्रमाण है। कहते हैं कि जब सबका जन्म उसी एक ज्योतिसे हुआ है तो ब्राह्मण और शुद्र जैसे भेदभाव क्यों?

'एक ज्योति थैं सब उतपना, कौन ब्राह्मण कौन सूदा।।'

वर्ण पध्दति का खण्डन अैर स पध्दति को कारणों सक उत्पन्न कई प्रकार की जाति उपजातियों को भेदभावनाओं को नाश कर विशाल मानवीयता के आधार से स्वस्थ समाज की स्थापना का उद्दश्य संत और शिवशरण कवियों में समान रूप से दिखाई देता है। इसलिए बसवण्णा ने ऐसी सामाजिक व्यवस्था को 'वर्णानां कि प्रयोजनं? का प्रश्न किया तो संत पलटू सहाब की ने जन्म के आधार से निर्मित चारों वर्णोंको मिटाकर सरल मानवी भक्ति की परिपाटी चलाने का उपदेश।

सन्त और शरण साहित्यकालीन समाज में ब्राह्मण सबसे ऊँचे स्थान पर थे। वे अपने आपको धर्म के एकमात्र अधिकारी समझते थे और धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सुविधाओं का उपभोग करते थे। सामाजिक व्यवस्था सबसे ऊपर ब्राह्मण और नीचे जमीन में धँसे हुए शुद्र और दलित थे। सन्त साहित्यकाल में उत्तर भारत के समाज में शासक वर्ग मुसलमान होने पर भी हिन्दू समाज में ब्राह्मणों का ही अद्वितीय स्थान था। इसीलिए यह दिखाई देता है कि दोनों के काव्य में ब्राह्मणों की निन्दा और उनके आडम्बरपूर्ण धर्माचरणों के खंडन की अभिव्यक्ति पाई जाती है।

ढोंगी और धर्मान्ध ब्राह्मणों के सामने संतो के मन में कभी हीन भावना काम नहीं करती। वेदशास्त्रागम पुराणों के अध्ययन से अपने आपको श्रेष्ठ समझनेवाले तथाकथित उच्च कुलीन ब्राह्मणों को जुलाहे कबीर ने ललकार कर कहा था–

''तु ब्राह्मण मैं कासी का जुलाह, मुहि तोहि कैसे के बनाही।
हमारे राम ना कहि ऊबरे, वेद भरोसे पाँडे डूबि मरहिं।।''

अपने ब्राह्मणत्त्व पर अधिक मान करनेवालों को तो कबीरदास कह उठतें है। कि 'आपका जन्म भी औरों की तरह ही हुआ है न कि किसी विशेष मार्ग से।'

इस चुनौती को सुनकर शायद ही कोई ब्राह्मण अपने ब्राह्मणत्त्व की श्रेष्ठता से अकडने का साहस करता होगा। यज्ञयाग करते हुए अपने आपको श्रेष्ठ समझनेवाले ब्राह्मणों के घमंड पर बसवण्णा कठोर व्यंग करते है। कहते हैं कि अग्नि पानी और बाजार की धूल उड़ाते हुएस चिल्ला–चिल्ला– कर सहायता के लिए लोगों को बुलायेंगे–

''अग्नि देव का यज्ञ करता ब्राह्मण के घर में,
अग्नि और लकड़ी से जब घर जलने लगे तो,
गंदा पानी, बाजार की धूल डालते
चिल्ला–चिल्लाकर सबको पुकारते है।''

ब्राह्मणों में यज्ञोपवीत उस समय में अर्थहीन बन गया था। उपनयन के उद्देश्य का अर्थ यज्ञोपवतीत पहनने मात्र तक रह गया था। भक्त या ज्ञानी होने पर भी अर्थहीन तिलक या जप–माला की तरह यज्ञोपवीत के बन्धन से मुक्त नहीं, होने वाले ब्राह्मणों पर बसवेश्वर हँसते हैं– 'बिचारा, ब्राह्मण श्रेष्ठ भक्त होते हुए भी यज्ञोपवीत के बन्धन से मुक्त नहीं।'

संतो और शिवशरणों ने एक ओर वरेण्य ब्राह्मणों को फटकारा तो दूसरी ओर हीन भावना से पीड़ित अंत्यजों को ऊपर उठाया और उमें स्वाभिमान भर दिया। ये निम्नवर्ग और उपेक्षितों में आत्माविभान भरकर उच्च वर्ग के मस्तिष्क से उच्चता के अहं को मिटाना चाहते थे। इन दोनों सत कवियों ने अस्पृश्योध्दार और दलितों में स्वाभिमान भरने का जो पुनीत कार्य अपने काव्य द्वारा किया भारतीय इतिहास में इसका अपने अपने आप में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

बसवेश्वर और अन्य शरणों ने यह दिखाया कि अंत्यज भी श्रेष्ठ है। अवसर प्राप्त होने पर हर कोई विकास की चरमसीमा पर पहुँच सकता है। बसवण्णा ने उन्हे ताऊ, पिता और भाई कहा और सदैव ही उनके साथ छोटपा बने रहना चाहा। उनके विचार तो स्पष्ट ही हैं कि कोई जन्म से श्रेष्ठ या कनिष्ठ नहीं होता। अपने आपको श्रेष्ठ कहना और सामान्य लोगों से दूर रहना नरक प्राप्ति के समान है

संत कवियों के मन में भी इन उच्च वर्ग और वर्ण वालों के प्रति जिनकी उच्चता के अहं ने अंत्यजों को छोटा बना दिया था– बड़ा ही क्रोध था। वह क्रोध सात्विक और निर्माणात्मक था। कबीर ने कहा है कि इनके ऊंच मंदिरों को जला दो। इनसे भी गरीब की झोंपडी ही अच्छी है– जहाँ भगवान का स्मरण तो होता है–

''रामजपत दलित भला, टूटी घर की छानी।
ऊँचे मंदिर जाली दे जहाँ न सारंग पानि।।''

संत उन उच्च लोगों से पूछते हैं कि क्या तुम में दूख का संचार होता है और हम में रक्त? जो अपने आपको श्रेष्ठ कहते हो ब्राह्मण कहते हो, और हमें शूद्र? तुम कैसेश्रेष्ठ और हम कैसे कनिष्ठ? हमारे कैसे लोहू तुम्हारे कैसे दूध। तुम कैसे ब्राह्मण पाण्डे हम कैसे सूद?

बसवण्णा जो सदैव ही दलितों के हित में चिंतित होते थे प्रायः अपमान करने के लिए किसीने उनकी जाति ही मेरी जाति है। उत्तर से वे दंग रह जाते है।

जति माँग चन्नय्या की चमार कक्कय्या की हे कूडलसंगमदेव.....!

इस प्रकार संत और शिवशरणों ने जो अपने युगीन वर्णभेद और जाति भेद के रोग पीड़ित समाज को मुक्त करने का प्रयास अपने

काव्य द्वारा किया है वह हिंदी और कन्नड साहित्य में अद्वितीय है। वर्ण भेद, जाति भेद, एवं उच्च वर्ग और वर्ण वालों के अहं का खण्डन उपेक्षित अत्यंजों में स्वाभिमान भर कर उन्हों ऊपर उठाने के प्रयासों की अभिव्यक्ति दोनों के काव्य में समान रूप से पाई जाती है। सब को समानता की दृष्टि से देखने की इनकी प्रवृत्ति समाज की जननी के कोमल हृदय की संवेदनशीलता इनके काव्य में है।

धर्म और जातीय संघर्षों से समम्बन्धित इनकी काव्याभिव्यक्ति में प्रमुख अन्तर संतो के हिन्दू–इस्लाम संघर्ष से सम्बन्धित है। इसका प्रमुख कारण है सन्त साहित्यकालीन उत्तर भारत का समाज। उत्तर भारत का वह समाज इस्लाम नरेशों से शासित था। इस्लामों का शासन भारत में स्थिर हो गया था। इस्लाम नरेश धर्मान्ध थे। हिंदुओं के मंदिर नाश कर उसी स्थान पर मस्जिद बनवाये जाते थे और हिंदू असहाय थे। हिंदुओं का सब प्रकार से शोषण उनके शासकों से ही होता था।

इसलिए हिंदू मुसलमानों का धार्मिक संघर्ष सामान्य बात थी। हिंदू हारे हुए थे और मुसलमान शासक थे। हिंदुओं की स्थिति दयानीय थी। संत कवियों ने इसे देखा और विशाल हृदय से परखा। इस्लाम का शासन भारत से स्थापित हो चुका था और वे यही बस गये थे। इसलिए अब हिन्दू–मुसलमानों को मिलकर रहने में ही दोनों का हित था। मानवीयता की दृष्टि से दोनों में समन्वय करने की अत्यन्त आवश्यकता थी और सन्त कवियों ने यह काम नितान्त प्रामाणिकता से किया।

दोनों धर्मों के धर्मान्धों को जो समाज की एकता के लिए कंटक थे इन्होंने फटकार सुनाई भाईचारा भाव जगाया और दोनों में एकात्मकता का भाव सनतों ने जगाया। उनके काव्य में सर्वत्र हिंदी मुसलमानों के समन्वय की अभिव्यक्ति पाई जाती है। सारा स्नत काव्य इस समन्वय की अभिव्यक्ति पाई जाती है। सारा स्सन्त काव्य इस समन्वय के प्रयास का उदाहरण है।

हिन्दू–इस्लाम संघर्ष, उनमें समन्वय करने के प्रयास की अभिव्यक्ति सन्तो के काव्य में मात्र हुई है। शिवशरणों में नहीं। इस दृष्टि से सन्तों को दुतरफा युध्द लड़ना पड़ा था– हिंदू–मुसलमान संघर्ष और समन्वय, ब्राह्मण, शुद्रों की समानता का संघर्ष। दोनों ही कवियों ने अपने युगीन जाति और धर्मगत संघर्ष की ध्वनियाँ युनीं और इसलिए उनका काव्य युगीन सामाजिक चेतना से सजीव बना रहा।

हिन्दी के संत और कन्नड़ के शिवशरणों ने युगीन सामाजिक समस्या जाति भेद की ओर ध्यान दिया। जाति भेद एवं वंर्ण भेद के द्वारा अपने युग को जो हानि उठानी पड़ी थी एक वर्ग को जो अपमानित होना पड़ा था इसका जोरदार खण्डन हिंदी के संत और कन्नड़ के शरण कवियों ने किया है। इन्होने युग–युगों से अवरूध्द–धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और साहित्य के द्वार शूद्र और अत्यंजों के लिए खोल देये। अत्यंजों में इन्होंने स्वाभिमान भर दिया। इन कवियों ने उच्च वर्ग और वर्ण वालों के अहं को तोड़ दिया और सर्व–हारा वर्ग की साहित्यिक, सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक का प्रयास किया।

ये संत और शरण कवि ऐसे एक समाज की स्थापना करना चाहते थे जहाँ कोई उच्च या नीच न हो, सबको सब प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त है। इसलिए हम देख सकते है। कि दोनों कवियों ने समान रूप से जाति पध्दति का, जाति के नाम से समाज में पनप रहे भेदभाव और सब प्रकार की अनिष्टताओं का खण्डन किया है। इन्होंने चाहा कि सब प्रकार को समानताओं से स्वस्थ समाज की स्थापना हो। इनकी भावनाओं के परिवार में सब समान हैं– कोई छोटा या बड़ा नहीं है और कोई पराया नहीं है।

संतो और शरणों की इन्ही मान्यताओं के कारणों से इनका काव्य लोगों के लिए अति निकट रहा है। इसलिए उभयभाषी काव्य क्षेत्र में अधिकांश अंत्यज कवियों ने सजीव और आत्मीय श्रेष्ठ काव्य रचना की जो विश्व साहित्य के लिए बड़ी देन हो सकती है।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org